B- 4
L - 24
Indian
Society

भारत में विविधताजनित चुनौतियाँ/समस्याएं

1. नृजातीय विविधता (सांस्कृतिक विविधता और जनजातीय विविधता

↓

क्षेत्रवाद, अलगाववाद, बाहरी लोगों का विरोध आदि की समस्या।

2. धार्मिक विविधता ↓

साम्प्रदायवाद, धार्मिक संघर्ष, धार्मिक रूढ़िवाद एवं धार्मिक आतंकवाद की समस्या

3. भाषाई विविधता ↓

भाषावाद तथा भाषाई पहचान को लेकर आन्दोलन एवं संघर्ष जैसी समस्या।

4. जातिय विविधता ↓

जातीवाद तथा जाति संघर्ष एवं नरसंहार आदि की समस्या

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

5- प्रजातीय विविधता

⇓

प्रजातीय भेदभाव एवं प्रजातीय आधार पर हिंसा एवं अलगाववाद की समस्या

भारत में → विविधताजनित → समस्याओं के कारण

भारत में उपरोक्त समस्याओं के लिए भारतीय समाज की विविधता को उत्तरदायी ठहराया जाता है-

परन्तु यह उल्लेखनीय है कि भारतीय समाज की यह विविधता स्वयं में उपरोक्त समस्याओं का कारण नहीं है बल्कि यह कई अन्य कारणों के साथ संयुक्त होकर उपरोक्त समस्याओं के लिए उत्तरदायी रही है। भारतीय समाज की यह विविधता भारत में एतिहासिक रूप से विद्यमान रही है जबकि उपरोक्त समस्यायें आधुनिक भारतीय समाज की विशेषता है इसलिए उपरोक्त समस्याओं के लिए निम्न कारणों को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है-

1. गरीबी, विषमता एवं वंचन
2. उपभोक्तावाद के साथ महत्वाकांक्षा में वृद्धि, प्रतिस्पर्धा में वृद्धि एवं व्यक्तिवाद में वृद्धि
3. वैश्वीकरण जनित पहचान का संकट एवं नृजातीयता में वृद्धि।
4. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों की नकारात्मक भूमिका
5. विदेशी शक्तियों की भूमिका

मूल्यांकन एवं सुझाव

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हाल के वर्षों में भारतीय समाज में विविधता जनित कई समस्याओं/चुनौतियों का उद्भव हुआ है परन्तु उपरोक्त समस्याओं के लिए भारतीय समाज की विविधता नहीं बल्कि अन्य कारण प्रमुखता उत्तरदायी रहें हैं जो भारतीय समाज की विविधताओं के साथ संयुक्त होकर उपरोक्त समस्या को उत्पन्न करते रहे हैं।

इसलिए जरूरत है उन कारणों को दूर करने की-

तभी विविधता में एकता की आदर्श के साथ एक विकसित एवं समरस भारत का निर्माण किया जा सकता है।

(उपरोक्त कारणों के सन्दर्भ में सुझाव लिखे।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

[भारत में क्षेत्रवाद की समस्या]

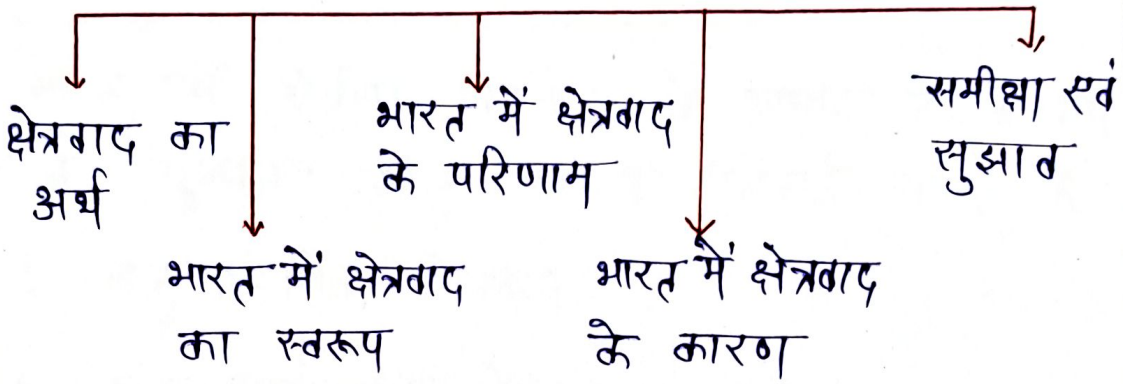

- क्षेत्रवाद का अर्थ
- भारत में क्षेत्रवाद का स्वरूप
- भारत में क्षेत्रवाद के परिणाम
- भारत में क्षेत्रवाद के कारण
- समीक्षा एवं सुझाव

क्षेत्रवाद का अर्थ :-

वृहद अर्थों में,

किसी क्षेत्र विशेष के साथ, वहाँ के लोगों में लगाव की भावना क्षेत्रवाद कहलाता है।

(क्षेत्रवाद का सकारात्मक संदर्भ)

विशिष्ट अर्थों में,

किसी क्षेत्र विशेष के साथ, वहाँ के लोगों में अंधलगाव की भावना, जहाँ लोग क्षेत्रीय हितों को राष्ट्रीय हित से अधिक महत्व देते हैं और अन्य क्षेत्र के लोगों के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति रखते हैं - को क्षेत्रवाद कहा जाता है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS KHAN SIR

(क्षेत्रवाद का नकारात्मक सन्दर्भ)

(b) भारत में क्षेत्रवाद का स्वरूप :-

भारत में क्षेत्रीय विस्तार के आधार पर क्षेत्रवाद के मुख्यतः तीन स्वरूप दिखाई पड़ते हैं-

1. बहुप्रादेशिक क्षेत्रवाद
2. अंतर प्रादेशिक क्षेत्रवाद
3. अंतः प्रादेशिक क्षेत्रवाद

भारत में मांग की प्रकृति के आधार पर क्षेत्रवाद के मुख्यतः निम्नचार स्वरूप दिखाई पड़ते हैं-

1. पृथकतावाद / अलगाववाद
2. स्वायत्ता की मांग
3. पृथक राज्य की मांग
4. बाहरी लोगों का विरोध

भारत में क्षेत्रवाद के परिणाम

भारत में क्षेत्रवाद के सकारात्मक सन्दर्भ ने कई सकारात्मक परिणामों को उत्पन्न किया

है जैसे -

1. उस क्षेत्र विशेष के विकास को तीव्र करके विकास में संतुलन की स्थापना।
2. क्षेत्रीय विषमता में कमी।
3. शक्ति को विकेन्द्रित करके लोकतंत्र को मजबूती

II.

परन्तु जब क्षेत्रवाद नकारात्मक सन्दर्भ में अभिव्यक्त होता है तो यह कई तरह के दुष्परिणामों को जन्म देता है जिसे भारत में भी देखा जा सकता है।

जैसे -

1. राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को खतरा
2. जान-माल की हानि।
3. आर्थिक विकास दुष्प्रभावित
4. सामुदायिक सौहार्द्रता
5. राष्ट्रवाद की भावना कमजोर
6. विधि-व्यवस्था को चुनौती एवं अपराध में वृद्धि।

भारत में क्षेत्रवाद का कारण

1. नृजातीय विविधता (सहायक कारण)
2. गरीबी बेरोजगारी एवं आरक्षा, वैयक्तिक विषमता, क्षेत्रीयता विषमता एवं वंचन
3. वैश्वीकरणजनित पहचान संकट एवं नृजातीयता में वृद्धि.
4. उपभोक्तावाद एवं महत्वाकांक्षा में वृद्धि फलतः व्यक्तिवाद में वृद्धि।
5. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों की नकारात्मक भूमिका
6. विदेशी शक्तियों की भूमिका।

समीक्षा एवं सुझाव

1. निश्चित रूप से भारत में क्षेत्रवाद के परिणाम सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रहे हैं
2. नृजातीय विविधता स्वयं में क्षेत्रवाद का कारण नहीं है बल्कि अन्य कारण अधिक महत्वपूर्ण हैं।

3. भारत में क्षेत्रवाद की समस्या समाधान हेतु विविधता को समाप्त करना। अव्यवहारिक एवं संविधान के विपरीत है।

4 इसलिए अन्य कारकों को दूर करके क्षेत्रवाद की समस्या का समाधान संभव है।

⇓

(क्षेत्रवाद के कारणों के सन्दर्भ में सुझाव लिखे)

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR